ROHTAS MAHILA COLLEGE SASARAM
Department of - History - Subsidiary
18-05-2020 - B.A.I [2019-20]
Dr. Satyajeet Sarang [Notes]

8] गुप्त वंश - समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, स्वर्णयुग, गुप्त साम्राज्य का पतन।

1. श्रीगुप्त [240-280 ई०]

प्रभावती गुप्त के पूना स्थित ताम्रपत्र अभिलेख में श्री गुप्त का उल्लेख गुप्त वंश के आदिराज के रूप में किया गया है लेखों में इसका गोत्र धारण बताया गया है। इनका शासन काल 240 से 280 ई० तक रहा।

श्रीगुप्त ने महाराज की उपाधि धारण की। इत्सिंग के अनुसार श्रीगुप्त ने मगध में एक मंदिर का निर्माण करवाया। तथा मंदिर के लिए 24 गांव दान में दिए थे।

→ इसके द्वारा धारण की गयी उपाधि महाराज सामंतों द्वारा धारण की जाती थी, जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि श्रीगुप्त किसी शासक के अधीन शासन करता था।

राजनीतिक इतिहास:— मौर्य साम्राज्य के विघटन के बाद दीर्घकाल तक भारत एक शासन सूत्र के अन्तर्गत नहीं आ सका। कुषाणों एवं सातवाहनों ने कुछ हद तक स्थिरता लाने का प्रयास किया

किन्तु वे उत्तर एवं दक्षिण भारत तक ही सीमित रहे। इस राजनीतिक विघटन का सामना करने के लिए मुख्य रूप से तीसरी शताब्दी में भारत के तीन कोनों से तीन नये राजवंशों का उदय हुआ।

मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग में नाग शक्ति, दक्कन में वाकाटक तथा पूर्वी भारत में गुप्तवंश के शासक उदित हुए। गुप्त वंश का आरम्भिक राज्य उत्तर प्रदेश और बिहार में था। सम्भवतः गुप्त शासकों के लिए बिहार की अपेक्षा उत्तर प्रदेश अधिक महत्व वाला प्रान्त था क्योंकि आरम्भिक गुप्त मुद्राएं और अभिलेख मुख्यतः इसी राज्य [उ० प्र०] में पाये गये है। सम्भवतः गुप्त लोग कुषाणों के सामन्त थे।

कुषाणों के बाद मध्य भारत का एक बड़ा भाग मुरुडों के अधिपत्य में आया और उन्होंने 250 ई० तक राज्य किया तत्पश्चात् गुप्त अधिपत्य शुरू हुआ।

★ कुषाणों के पतन के बाद से लेकर गुप्तों के उदय के पूर्व का काल राजनैतिक दृष्टि से विकेन्द्रीकरण तथा विभाजन का काल माना जाता है। गुप्तों की उत्पत्ति का प्रश्न प्राचीन भारतीय इतिहास का सर्वाधिक विवादग्रस्त प्रश्न रहा है।

★ गुप्तों की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों के मत निम्नलिखित हैं।

विद्वान		मत
के० पी० जायसवाल	⇒	शूद्र
स्मिथ, अल्तेकर, रोमिलाथापर	⇒	वैश्य
गौरी शंकर ओझा, रमेशचन्द्र मजूमदार, अतिय चट्टोपाध्याय		
हेमचन्द्र राय चौधरी	⇒	ब्राह्मण

★ गुप्त वंशीय लोग धारण गोत्र के थे।

[2.] घटोत्कच गुप्त [280-319 ई०]

⇒ लगभग 280 ई० में श्रीगुप्त ने घटोत्कच को अपना उत्तराधिकारी बनाया। इसने भी महाराज की उपाधि धारण की। प्रभावती गुप्त के पूना एवं रिद्धपुर ताम्रपत्र अभिलेखों में घटोत्कच को गुप्त वंश का प्रथम राजा बताया गया है।

इसका राज्य सम्भवतः मगध के अगल-बगल तक ही सीमित था। उसने लगभग 319 ई० तक शासन किया।

[3.] चन्द्रगुप्त - I [319-335 ई०]

गुप्त वंश का प्रथम वास्तविक संस्थापक शासक था। घटोत्कच के पुत्र चन्द्रगुप्त प्रथम ने गुप्त साम्राज्य की नींव डाली। गुप्तसाम्राज्य का प्रथम स्वतंत्र शासक जिसने महाराजाधिकार की उपाधि धारण की। चन्द्रगुप्त प्रथम ने 319-20 ई० में 'गुप्त संवत्' की स्थापना की थी।

चन्द्रगुप्त प्रथम शासक था जिसने सोने का सिक्का चलवाया। चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया था।

चन्द्रगुप्त प्रथम के पश्चात उसका पुत्र समुद्रगुप्त शासक बना। गुप्त वंश में ही सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त प्रथम ने रजत [चाँदी] मुद्राओं का प्रचलन करवाया था।

[4.] समुद्रगुप्त [335-375 ई०]

चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त शासक बना। उसके समय में गुप्त साम्राज्य का सबसे अधिक विस्तार हुआ। समुद्रगुप्त के सामरिक विजयों का विवरण हरिषेण के प्रशस्ति काव्य [प्रयाग प्रशस्ति] में मिलता है। इसी प्रशस्ति में चन्द्रगुप्त प्रथम द्वारा समुद्रगुप्त को उत्तराधिकारी चुने जाने का विवरण मिलता है।

⇒ समुद्रगुप्त ने उत्तर भारत [आर्यावर्त] के नौ शासकों को पराजित किया।
पराजित राजाओं में अच्युत, नागसेन तथा गणपतिनाग प्रमुख थे। उसने उत्तर भारत [आर्यावर्त] पर प्रत्यक्ष शासन किया था।

⇒ उसने दक्षिणापथ के बारह शासकों को पराजित किया था। दक्षिणापथ नीति की तीन प्रमुख आधार शिलाएँ थी।

[1.] ग्रहण — शत्रु पर अधिकार।
[2.] मोक्ष — शत्रु को मुक्त करना।
[3.] अनुग्रह — राज्य को लौटाकर पर दया करना।